REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2018

पर्यावरण प्रबंधन : लोक जागरूकता बढ़ाने में मीड़िया की भूमिका

राहुल यादव
सेट, नेट–जे.आर.एफ. (मैनेजमेंट) चौमूँ, जयपुर (राज.)

प्रस्तावना :–

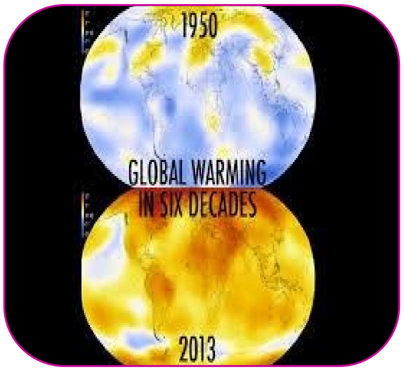

हमने कुछ दिन पहले ही 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया है। हर वर्ष की भांति इस दिवस की भी दो–चार पौधे लगाकर इतिश्री कर ली गयी । व्यवहार में पर्यावरण मानव से जितना नजदीक है, उतना मानवीय रिश्ते पर्यावरण से नजदीक नहीं है। दिक्कत यह है कि हम जितना महत्व फादर्स डे, मदर्स डे आदि को देते है, क्यों उतना ही महत्व पर्यावरण दिवस को नहीं देत है?

जब मानव का जन्म होता है, तब वह आयु के विभिन्न चरणों से गुजरता हुआ मृत्यु को प्राप्त करता है। इसी प्रकार हमारे चारों ओर फैला हुआ आवरण, जिसे हम पर्यावरण की संज्ञा देते है, इसमें कई अन्य जीव, वनस्पतियाँ व भौगोलिक संरचाएँ भी विद्यमान है, जिन पर मानव जीवन का निर्वहन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निर्भर करता है। अगर यह प्रकृति, मानव को जीवन जीने के प्रमुख कारक जैसे :– प्राणवायु, ऑक्सीजन, ऊर्जा के लिये भोजन व जल इन तीनों में कोई भी एक कारक देना बंद कर दें या कम कर दें, तो मानव जीवन संकट में आ जायेगा। आज का मानव इस औद्योगिक अंधाधुंध दौड़ में अपने आपको सबसे आगे रखने के लिये इस पर्यावरण प्रबंधन को स्वयं के हाथों ही खत्म करता जा रहा है। और आप चौकिएगा नहीं, अगर यही प्रक्रिया कुछ अधिक समय तक यूहीं चलती रही तो, वो दिन भी दूर नहीं, जब मानव–जीवन पृथ्वी से नष्ट हो जायेगा। मैंने अपने इस लेख का विषय ''पर्यावरण प्रबंधन : लोक जागरूकता बढ़ाने में मीड़िया की भूमिका'' लोगों का ध्यान पर्यावरण में हो रही क्षति व पर्यावरण संरक्षण व प्रबंधन में मीड़िया क्या कार्य कर रही है एवं उसकी क्या भूमिका हो सकती है? यह बताने के लिये चुना है।

उद्देश्य :

- इस तेज रफ्तार भरी जिंदगी में हम पर्यावरण प्रबंधन व संरक्षण के लिये कितने जागरूक है।
- क्या पर्यावरण प्रबंधन व संरक्षण विषय पर आधुनिक मीड़िया की कोई भूमिका बनती है।
- मीड़िया पर्यावरण प्रबंधन व संरक्षण को लेकर क्या कार्य कर रहा है व उनका भविष्य में भी इस विषय पर और क्या–क्या योगदान हो सकता है।

अगर आज के नवीन आधुनिक मीड़िया को देखें तो ज्ञात होता है कि उनमें राजनीति, क्राइम, मनोरंजन, खेल, आर्थिक जगत से जुड़ी खबरें, बडे नेताओं से जुड़े समाचार उनकी हैडलाइन के प्रमुख विषय बनते हैं। पर्यावरण प्रबंधन व उससे जुड़ा कोई भी समाचार या न्यूज तभी इनकी हैडलाइन बनता है, जब या तो विश्व में पर्यावरण से जुड़ा कोई विश्व सम्मेलन आयोजित हो रहा होता है या फिर विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जा रहा होता है या फिर विश्व में किसी स्थान पर पर्यावरण के असंतुलन के कारण कोई बड़ी आपदा आयी होती है। जैसा कि संयुक्त राष्ट्र की दिसम्बर–2015 में विश्व पर्यावरण में ही रहे परिवर्तन पर पेरिस सम्मेलन आयोजित हुआ। उस समय मात्र 5–7 दिनों के लिये मीड़िया का ध्यान पर्यावरण के प्रबंधन व संरक्षण की आवश्यकता पर गया, परन्तु उसके कुछ दिनों बाद इससे जुड़ी खबरें मीड़िया से नदारद थी।

यहां पर्यावरण प्रबंधन व संरक्षण से अर्थ है – ''प्रकृति द्वारा उपलब्ध करवाये गये संसाधनों का प्रबंधन व संरक्षण।'' पर्यावरण प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिये जल, वायु, ध्वनि, भूमि आदि में हो रहे प्रदूषण को नियंत्रण में लाना होगा व पर्यावरण में उपलब्ध संसाधनों का वैज्ञानिक प्रबंधन करते हुये उपयोग करना होगा। आज प्रदूषण के कारण ओजोन परत का क्षय होने से पृथ्वी की सतह धीरे–धीरे गर्म होती जा रही है, जिसे बर्फ के ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं व जिसका मुख्य प्रभाव समुद्र तटीय देशों के निवासियों पर सीधा पड़ रहा है। पर्यावरण का प्रबंधन व संरक्षण पूरे विश्व के समक्ष एक ज्वलंत मुद्दा बना हुआ है व सभी देशों के साझा मंच 'संयुक्त राष्ट्र संघ' की बैठकों में भी समय–समय पर यह सवाल उठते रहें है कि पर्यावरण संबंधित मुद्धों का किस प्रकार से निवारण किया जावें।

मीड़िया जो कि आज विश्व के लगभग प्रत्येक कोने में हर जनमानस के मध्य अपने किसी न किसी रूप में विद्यमान है। यह मीडिया इस मुद्धे पर वैश्विक व स्थानीय स्तर पर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अगर हम स्थानीय मीड़िया यानि भारतीय मीड़िया का अवलोकन करते हैं तो यह पाते हैं कि हमारे स्थानीय मीड़िया के पास किसी राजनेता द्वारा किया गया कोई विशेष कमेंट, किसी फिल्मी सेलिब्रिटी द्वारा किया गया कोई ट्वीट, लूट–पाट, हत्या या कोई ज्त्च बढ़ाने वाली कोई न्यूज, जिससे कि अधिक से अधिक दर्शक व श्रोता इनसे जुड़े, को ही मुख्यतया दिखाया

जाता है। जब अमेरिकी राष्ट्रपति भारत आते हैं या कोई विशेष अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन दिल्ली में आयोजित होना होता है, तो भारतीय मीड़िया को दिल्ली के प्रदूषण की चिंता हो जाती है या फिर भारत में कहीं कोई प्राकृतिक आपदा आती है जैसे :– केदारनाथ की आपदा, चेन्नई में बाढ़, उड़ीसा व महाराष्ट्र में सूखा व अकाल, उत्तर–पूर्वी भारत में भूकम्प, मानसून में देरी, तब मीड़िया इसका कवरेज पूरे जोर–शोर से करती है। साथ ही राहत कार्यो, सरकारी सहायता व ताजा स्थिति का पूरा कवरेज मीड़िया द्वारा किया जाता है।

पर्यावरण का उचित प्रबंधन व संरक्षण करना, लोगों में इसके प्रति जागरूकता फैलाना, विद्यार्थियों में पर्यावरणीय शिक्षा का प्रसार व चेतना जागृत करने में पूरे विश्व का मीड़िया अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभा सकता है। भारत सरकार द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिये जो नयी–नयी नीतियाँ बनायी जाती है, उनका पूर्ण नियोजन जनता की पूर्ण सहभागीदारी पर ही टिका हुआ है और यह जनसहभागिता मीड़िया द्वारा उत्पन्न की जा सकती है। मीड़िया को अपना महत्व समझते हुये विश्व व स्थानीय स्तर पर जो महत्वपूर्ण पर्यावरणीय घटनाएँ घटित हो रही है, जो नये–नये पर्यावरणीय मुद्धे सामने आ रहे हैं, उनका पूर्ण कवरेज पूरी जानकारी के साथ सही समय पर आम लोगों को पहुँचाना चाहिये, जिससे कि आम व्यक्ति इन मुद्धों व सूचनाओं को समझ सकें, इनका विश्लेषण कर सकें, उनका व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकें व उसमें इसके प्रति चेतना व जागरूकता उत्पन्न हो, जिससे कि पर्यावरण प्रबंधन का नियोजन अच्छी तरह से हो सकें।

भारत में परम्परागत रूप से दो तरह की मीड़िया मुख्य है – एक प्रिंट मीड़िया व दूसरी इलेक्ट्रानिक मीड़िया। ये दोनों मीड़िया पर्यावरण प्रबंधन व संरक्षण के कार्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका विशेष रूप में निभा सकती है। प्रिंट मीड़िया पर्यावरणीय मुद्धों पर समाचारों का प्रकाशन करके, पर्यावरणीय मुद्धों व संरक्षण के तरीकों पर लेख लिखकर, विभिन्न कार्टूनों, पोस्टर्स, चित्रों, व्यंग्यों के माध्यम से पर्यावरण प्रबंधन की महत्ता को आम जन मानस तक पहुँचाकर जनता की सहभागिता बढ़ा सकता है। भारत सरकार के दो मुख्य मीड़िया स्त्रोत आकाशवाणी व दूरदर्शन आज लगभग भारत के प्रत्येक कोने में अपनी पहुँच रखते हैं। ये दोनों मीड़िया माध्यम पर्यावरणीय प्रदूषण व उससे होने वाली क्षति, प्रदूषण को कम करने के उपायों, पर्यावरणीय व सतत विकास की अवधारणा से संबंधित समाचार संदेश आम जनमानस तक पहुँचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। दूरदर्शन द्वारा पर्यावरण में विभिन्न तरह के होने वाले प्रदूषणों पर कार्यक्रम प्रसारित करके तथा जल एवं भूमि संरक्षण व पर्यावरण संरक्षण से संबंधित तरीको व नीतियों का आम लोगों तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से प्रचार किया जा सकता है। आजकल कई प्राइवेट न्यूज चैनल ग्लोबल वार्मिंग, नेपाल में भूकम्प,

केदारनाथ में हुयी तबाही व कई अन्य पर्यावरणीय मुद्धों पर विशेष कार्यक्रम प्रसारित कर चुके हैं व इनके द्वारा लोगों को पर्यावरणीय असंतुलन से उत्पन्न खतरों के बारे में भी बार–बार आगाह किया जाता रहा है।

भारत में फिल्म मीड़िया, वेब मीड़िया, सोशियल साइट्स, सूचना प्रौद्योगिकी भी पर्यावरण प्रबंधन व संरक्षण के लिये एक महत्वपूर्ण मीड़िया स्त्रोत बनकर उभरा है। फिल्मों द्वारा कई बार पर्यावरणीय मुद्धों को उछाला गया है, कई डॉक्यूमेन्ट्री भी बनायी गयी है। वेब मीड़िया पर कई केम्पेन भी चलाये गये है – जैसे नर्मदा बचाओ आंदोलन, गंगा बचाओ आंदोलन, टिहरी बाँध विरोधी आंदोलन व अभी हाल ही में दिल्ली में बढ़ रहे वायु प्रदूषण पर चिंता आदि प्रमुख है। मीड़िया द्वारा किये गये प्रयासों के फलस्वरूप ही इन मुद्धों को अपने उद्देश्यों में काफी हद तक सफलता भी मिली।

आज की आधुनिक मीड़िया को परम्परागत व [illegible] बढ़ाने वाली खबरों से ऊपर उठकर पर्यावरण व प्रकृति के प्रबंधन व संरक्षण के महत्व को समझने व पर्यावरणीय पत्रकारिता को अपनाने की नितान्त आवश्यकता हैं। आज पूरे विश्व के समक्ष भूमंडलीय ताप में हो रही वृद्धि व पर्यावरण असंतुलन एक बहस का मुद्धा बना हुआ है। अतः सिर्फ विकसित देशों की मीड़िया ही नहीं वरन् विकासशील व अल्पविकसित देशों की मीड़िया को भी इस मुद्धें पर एकसाथ मंच साझा करना होगा। साथ ही मीड़िया को अगर विश्व में कहीं भी पर्यावरण संरक्षण के नियमों का उल्लंघन किया जा रहा है, तो उन समाचारों को भी प्रमुखता से सामने लाना होगा व साथ ही अगर कोई व्यक्ति या संस्था पर्यावरण प्रबंधन के लिये बहुत ही अच्छा व सराहनीय कार्य कर रहे है, तो उनके कार्यो को आम जनमानस तक पहुँचाना होगा। इस तरह मीड़िया पर्यावरण प्रबंधन को जमीनी स्तर तक अमल में लाने व इसे सही दिशा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।

वेबसाइट :

https://sites.google.com/site/pradushan/hama-aura-hamara-paryavarana/paryavarana-ka-karo-khyala

http://envfor.nic.in/hi/division/environmental-education-awareness-and-training-eeat

https://www.google.co.in/search?safe=strict&site=&source=hp&q=ROLE+OF+MASS+MEDIA+IN+ENVIRONMENT+MANAGEMENT+&oq=ROLE+OF+MASS+MEDIA+IN+ENVIRONMENT

http://www.bhutanstudies.org.bt/publicationFiles/ConferenceProceedings/MediaAndPublicCulture/M-19.pdf

http://www.cop21.gouv.fr/en/

http://uir.unisa.ac.za/bitstream/handle/10500/9236/dissertation_roba_tf.pdf?sequence=1

http://kumarsinghravi.blogspot.in/2015/04/blog-post.html